





गेहूं में खरपतवार

मत्ती 13:24-30; 36-43

यीशु के दृष्टांत

यह दृष्टांत मत्ती 13:24-30 में दिया गया है; और यीशु ने मत्ती 13:36-43 में इसकी व्याख्या की है।

उस दिन यीशु एक नौका से उपदेश दे रहे थे। समुद्र तट पर बहुत से लोग उन्हें सुन रहे थे, और यीशु किनारे से कुछ दूरी पर नाव में बैठे थे। लोगों ने वह स्थान खोज लिया है जहाँ माना जाता है कि यीशु ने उपदेश दिया था। यहाँ एक खाड़ी थी, और जहाँ यीशु नाव में बैठे थे, उसके चारों ओर की भूमि U-आकार की थी। इससे एक प्राकृतिक मंच बन गया था, जिससे पानी से काफी दूर तक उनकी आवाज़ आसानी से सुनी जा सकती थी।

वह कई दृष्टांत सुनाते हैं। वे बीज बोने वाले के दृष्टांत से शुरू करते हैं, और फिर गेहूं में उगने वाले खरपतवारों या जंगली घास के दृष्टांत को सुनाते हैं।

यीशु ने अपने दृष्टांत की शुरुआत यह कहकर की कि "स्वर्ग का राज्य उस आदमी के समान है..." जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोए।

चर्चा करना:

यदि आप कोई बगीचा या फसल लगाने जा रहे हैं, तो आप किस प्रकार के बीज बोएंगे?

क्या आप यह सुनिश्चित करेंगे कि वे उन्हीं खाद्य पदार्थों के बीज हों जिन्हें आप उगाना चाहते हैं?

क्या आप यह सुनिश्चित करेंगे कि बीज क्षतिग्रस्त न हों और वे पौष्टिक खाद्य पदार्थों के स्वस्थ बीज हों?

यह आदमी अच्छी तरह जानता था कि वह क्या बो रहा है, और उसने अच्छे बीज बोए थे, यह उम्मीद करते हुए कि कुछ खास पौधे उगेंगे।

लेकिन जब वे लोग सो रहे थे, तभी उस आदमी का दुश्मन आया और उसने गेहूं के खेत में जंगली घास या खरपतवार बो दी।

यदि आप मूल ग्रीक शब्द को देखें जिसका उपयोग किया गया था मत्ती की पुस्तक में, और यह शब्द बहुत विशिष्ट है। यह एक पौधा है जिसे डार्नेल कहते हैं, जो देखने में लगभग गेहूं जैसा ही होता है। फल लगने तक इस पौधे और गेहूं के पौधे में अंतर करना लगभग असंभव है, और इस पौधे के दाने काले होते हैं।

चर्चा करना:

क्या आपको लगता है कि उस आदमी को अपने खेत में उगने वाले खरपतवारों के बारे में पता था?

शायद नहीं। उन्हें यह समझने में थोड़ा समय लगा कि आखिर हुआ क्या था।

जब पौधा बढ़ा, और यह फल पैदा हुआ, आप देख सकते थे कि यह गेहूं नहीं था।

उस आदमी के नौकर आए और उससे पूछा, "महाराज, क्या आपने अपने खेत में अच्छे बीज नहीं बोए थे? ये खरपतवार कहाँ से आ गए?" तब उस आदमी को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने उन्हें बताया, "किसी दुश्मन ने ऐसा किया है।" लेकिन नौकरों ने पूछा, "क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर इन्हें इकट्ठा कर लें?"

लेकिन उस आदमी ने कहा, "नहीं, वरना जब तुम जंगली घास उखाड़ोगे तो उसके साथ-साथ गेहूं भी उखड़ जाएंगे।"

चर्चा करना:

क्या आपने कभी बगीचे से खरपतवार निकाले हैं?

क्या आपने कभी बगीचा लगाया है और आपके फलों या सब्जियों के पास खरपतवार उग आए हैं?

आपने क्या किया?

यदि खरपतवार अच्छे पौधे के बहुत करीब उग रहा हो तो क्या होगा?





गेहूं में खरपतवार

कभी-कभी खरपतवार उखाड़ने से अच्छे पौधे को नुकसान पहुँच सकता है। कभी-कभी जड़ें इतनी पास-पास उग जाती हैं कि वे एक-दूसरे को घेर लेती हैं, जिससे पौधा उखड़ भी सकता है।

भूमि मालिक ने कहा, कटाई का समय आने तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो।

फिर मैं फसल काटने वालों से कहूँगा कि वे पहले जंगली घास इकट्ठा करें और उन्हें जलाए जाने के लिए गड्डों में बांध दें। परन्तु गेहूँ को खलिहान में इकट्ठा किया जाएगा।

भीड़ के चले जाने के बाद, शिष्य यीशु के पास आए और उनसे खेत में उगे खरपतवारों के दृष्टांत की व्याख्या करने के लिए कहा।

यीशु ने कहा, जिसने अच्छा बीज बोया है, वही मनुष्य का पुत्र है।

जब भी पवित्रशास्त्र में मनुष्य के पुत्र का उल्लेख होता है, तो वह यीशु के बारे में ही होता है।

खेत संसार है, और अच्छे बीज ईश्वर के राज्य की संतान हैं, परन्तु खरपतवार दुष्ट की संतान हैं। खरपतवार बोने वाला शत्रु शैतान है। फसल संसार का अंत है, और स्वर्गदूत फसल काटने वाले हैं।

इस कहानी में जिस प्रकार खरपतवारों को इकट्ठा करके जलाया गया, ठीक वैसा ही संसार के अंत में होगा। यीशु अपने स्वर्गदूतों को खरपतवारों को इकट्ठा करने के लिए भेजेंगे। सब कुछ वह जो पाप का कारण बनता है और बुराई करने वालों को आग की भट्टी में डाल देता है जहाँ रोना और दाँत पीसना होता है। (छोटे बच्चों को यह कहानी सुनाते समय सावधानी बरतें; उन्हें डराकर यीशु पर विश्वास दिलाने की कोशिश न करें।)

तब धर्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। यदि तुम्हारे पास सुनने के लिए कान हैं, तो उसे सुनने दो।





यीशु ने यह बीज बोया था।

यीशु के आने से पहले "स्वर्ग का राज्य" इस पृथ्वी पर नहीं था। इसीलिए वह हमेशा कहते थे, "स्वर्ग का राज्य निकट है।" वह लोगों को यह बताना चाहते थे कि उनके आने के बाद अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं।

यीशु ने इस दृष्टांत की व्याख्या बहुत स्पष्ट रूप से की है।

शैतान ने अपने कुछ खास लोगों को हमारे राज्य में तैनात कर रखा है। वे मसीहियों के बीच रह रहे हैं, चर्च जा रहे हैं और पूरी तरह से विश्वासियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। वे अंदर से घुसपैठ करते हैं और किसी राष्ट्र में जासूस की तरह, जिन्हें आप धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं, उनसे सहमत होने का दिखावा करना, खुलेआम उनका विरोध करने से कहीं अधिक प्रभावी हो सकता है। जब दुष्ट खुलेआम होता है, तो उसे पहचानना उस दुष्ट की तुलना में आसान होता है जो हमारे बीच छिपा होता है।

यीशु ने मत्ती 7:15 में झूठे भविष्यवक्ताओं के संदर्भ में इस अवधारणा को "भेड़ की खाल में भेड़ियों" के दृष्टांत के रूप में प्रस्तुत किया।

इन लोगों की पहचान करना मुश्किल हो सकता है।

वे फल देने तक "गेहूँ" यानी विश्वासियों जैसे ही दिखते हैं, फल देने के बाद ही शायद यह पता चल पाता है कि वे असल में कौन हैं। लेकिन अगर आप उनकी असली पहचान जान भी लें, तो भी उन्हें विश्वासियों के समूह से अलग करना या चर्च से निकाल देना ज़्यादा नुकसानदायक हो सकता है। यह उन कुछ मसीहियों के लिए हानिकारक हो सकता है जो इतने समझदार नहीं हैं और इससे उनका विश्वास डगमगा सकता है। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिनकी पहचान करना और भी मुश्किल हो, जो दुनिया के अंत तक चर्च में बने रहते हैं और फिर परमेश्वर उनकी असली पहचान उजागर कर देता है।

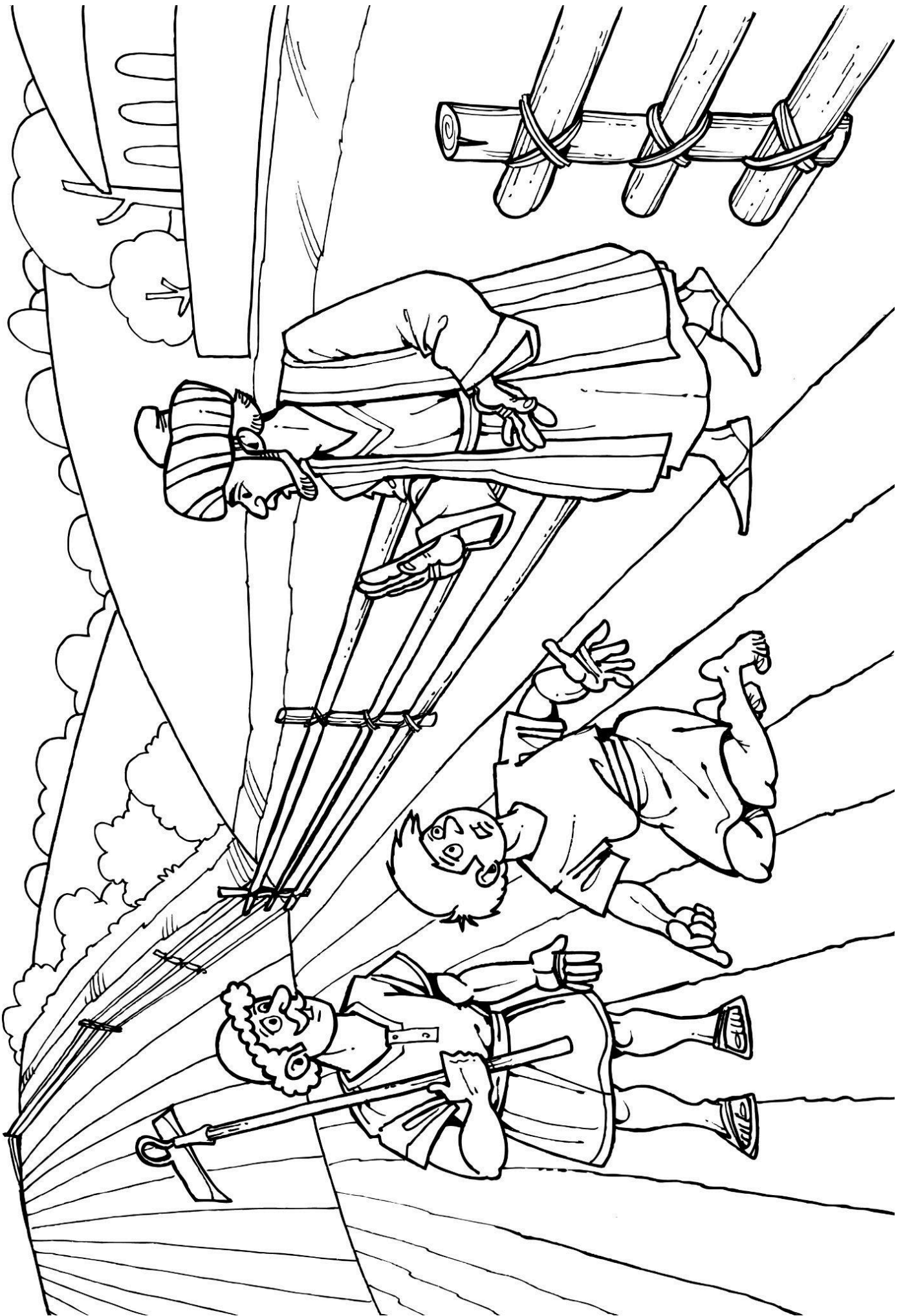
शैतान ने जानबूझकर इन लोगों को चर्च में स्थापित किया।

बगीचे में उगने वाले खरपतवार मिट्टी से उन पोषक तत्वों को सोख लेते हैं जिनकी अच्छे पौधों को बढ़ने के लिए आवश्यकता होती है। ठीक उसी तरह, चर्च में "शामिल" किए गए ये लोग दूसरों को भटका सकते हैं और उनका ध्यान भटका सकते हैं। ये लोग सच्चे विश्वासियों को अपने जाल में फंसा सकते हैं, और यदि खरपतवार की तरह व्यवहार करने वाले लोगों को ज़बरदस्ती हटा दिया जाए, तो वे अपने साथ उन सच्चे विश्वासियों को भी ले जाएंगे जो धोखे में हैं।

ऐसा होने पर कुछ लोग खुद भी आश्चर्यचकित हो सकते हैं। (मत्ती 7:21-23)

यीशु कहते हैं कि कुछ लोग उनके पास आकर उन्हें प्रभु, प्रभु कहकर पुकारेंगे और कहेंगे कि उन्होंने उनके नाम पर काम किए हैं, लेकिन वह उनसे कहेंगे, "मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था।"

हमें अपने हृदयों की जांच करनी चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे हृदयों को परखे (भजन संहिता 139:23)। कभी-कभी हम अपने हृदयों को पूरी तरह समझ भी नहीं पाते क्योंकि उन्हें समझना कठिन होता है (यिर्मयाह 17:9)। परमेश्वर के प्रति प्रेम बनाए रखने के लिए नम्रता आवश्यक है, और हम परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह हमारे हृदय को तैयार करे (भजन संहिता 10:17)।



पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

29. चट्टान पर

1. इस कहानी में कितने प्रकार के लोग हैं?
2. किस प्रकार का व्यक्ति यीशु की बातों का पालन करता है?
3. ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो यीशु की बात नहीं मानता?
4. उस मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर किस आधार पर बनाया था?
5. किसका घर नींव हीन था?

भजन संहिता 62:6-7

वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है। वही मेरा रक्षक है; मैं विचलित नहीं होऊंगा। परमेश्वर में ही मेरा उद्धार और मेरी महिमा है; परमेश्वर ही मेरी शक्ति और शरण का स्रोत है।

30. गेहूं में खरपतवार

1. नौकरों को कैसे पता चल सकता था कि खेत में कुछ और भी बोया गया है?
2. वे पहले क्यों नहीं बता सके?
3. एकमात्र अंतर क्या था?
4. जब उन्हें पहली बार में ही पता चल गया था कि खरपतवार क्या हैं, तो उन्होंने उन्हें क्यों नहीं उखाड़ा?
5. खरपतवार किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?

मत्ती 7:15-16

झूठे नबियों से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे भेड़िये होते हैं। तुम उन्हें उनके कर्मों से पहचानोगे। क्या मनुष्य कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कंटीली झाड़ियों से अंजीर तोड़ते हैं?

31. खमीर के दो प्रकार

1. कहानी में वर्णित महिला ने आटे की कितनी मात्रा का उपयोग किया?
2. क्या आटे से खमीर निकालना संभव है?
3. इसके बजाय आपको क्या करना होगा?
4. अपने शब्दों में बताइए, “फरीसियों का खमीर” क्या है? (लूका 12:1)

प्रेरितों 5:38-39

“...क्योंकि यदि यह योजना या यह कार्य मनुष्यों का है, तो यह निष्फल होगा; परन्तु यह परमेश्वर का है, तुम इसे नष्ट नहीं कर सकते - अन्यथा तुम परमेश्वर के विरुद्ध लड़ते हुए पाए जाओगे।”

32. मनुष्य का हृदय

नीतिवचन 4:20-23 पढ़ें

1. हमें किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?
2. हमें किस बात पर ध्यान देना चाहिए?
3. हमें परमेश्वर के वचन को कहाँ रखना चाहिए?
4. हमारे शरीरों के लिए परमेश्वर का वचन क्या है?

नीतिवचन 4:23

अपने हृदय को पूरी लगन से संभाल कर रखें, क्योंकि जीवन के सभी मुद्दे उसी से उत्पन्न होते हैं।